एक बाल कविता

जानवर और इंसान

कल रात गया मैं एक जंगल में
बंदूक अक़डकर लिये बगल में ।
लगा रहा था, जंगल का फेरा
ऐसे में जानवरों ने घेरा ।
गिरी बंदूक, सम्भल ना पाई
फिर जैसे, आफत ही आई ।
लगे जानवर मुझे सताने
देने लगे "इंसान" के ताने ।
मैं बोला,"क्या किया है मैंने ?
दाँत जो पैने किये हैं तुमने ।"
जानवर बोले,
"हमको पिंज़डे में तू रखता है
और हमें सताकर तू हँसता है ।
आओ! तुझको, मज़ा चखा दें
तुझे तेरी औकात बता दें ।"
मैं बोला,"आदमी से पंगा !
औकात का तुमको ज्ञान कहाँ है ? मानव-सा विद्वान कहाँ है ?
अरे ! तुम छोटे से जीव-जंतु हो, तुममें विशाल विज्ञान कहाँ है ?
धरती-जल-आकाश सभी पर, अपनी ताबेदारी है ।
चाँद पे मेरे पाँव पड़े, अब मंगल की तैयारी है ।"
जानवर बोले,"वाह ! बेटा, वाह !(बंदर हमारे पूर्वज थे)
बारूद पे रखकर धरती को, तू मंगल को देख रहा
अरे! बैठा उसी डाल को काटे, तू तो चिल्ली-शेख रहा ।
ये कोलाहल, ये प्रदूषण, तूने ही तो फैलाया है
धरती मिली थी रहने को, तूने शमशान बनाया है ।"
"शमशान नहीं, इस दुनिया का, नव-निर्माण कराया है
महल, सडक, पुल, ट्रेन, जहाज, वायुयान बनाया है ।
टी.वी.,रेडियो,मोबाईल,कम्प्यूटर, नेट को लाया है
हरित क्रांती को अपनाकर, धरती की उपज बढाया है ।"

जानवर बोले," बाहर की दुनिया को, तूने रंगकर खूब सजाया है
पर अपने मन को भी क्या, तूने शुद्ध बनाया है ?
धर्म-शास्त्र सब रट डाले, पर क्या कुछ समझ में आया है
काम,क्रोध,मद,लोभ,मोह से अब भी क्या बच पाया है ?
भूख-गरीबी, आधि-व्याधि से अब भी परेशान है तू
जर्जर जीवन-मूल्यों से, समझे आलीशान है तू ? "
मैं बोला,"अच्छा !मुझको समझाओ ।
कुछ अपना जीवन-मूल्य बताओ ।"
जानवर बोले,
" हममें रिश्वत-खोर नहीं है
ठग,बदमाश या चोर नहीं है ।
जाति-वाद को ज़ोर नहीं है
आतंकवाद का शोर नहीं है ।
हममें कोई बेईमान नहीं है
निंदा-चुगली के कान नहीं है ।
हममें दहेज का नाम नहीं है (तुम्हारी दुनिया में होगा)
जुए,नशे का काम नहीं है ।
जाति-धर्म की नहीं लड़ाई
हम पंछी एक डाल के भाई ।
सह-जीवन अस्तित्व हमारा
इक-दूजे का बने सहारा ।
अरे! अच्छे गुण हमसे अपनाओ
मैंने कहा,"मुझे सिखलाओ ।"
जानवर बोले," कुत्ते से सीख वफादारी
हाथी से बोझ उठा भारी ।
मिर्ची खा बोल मधुर वाणी
बकरी-सा झुककर पी पानी ।
पंछी-सा आकाश में उड़,
बेमतलब ना किसी से लड़ ।
मयूर-सा आनंद मना, कोयल-जैसी तान लगा ।
योग और आसन अपना, अपनी बिमारी दूर भगा ।"
मैं बोला,"तो क्या होना इंसान बुरा है ?"
जानवर बोले,"नहीं, उसका अभिमान बुरा है ।
देह मिली इंसान के जैसी
बनाओ मत हैवान के जैसी ।

खून की होली नहीं मनाओ,
तोप-मिसाईल-बम न बनाओ ।
जितनी भूख है, उतना खाओ,
व्यर्थ किसी को नहीं सताओ ।
वर्ना! याद रखो,
डाइनासोर भी गये थे मारे
कभी जो थे धरती के दुलारे ।
जियो और जीने दो सबको,
रहो और रहने दो सबको ।
प्यार से तुम सबको अपनाओ,
इस धरती को स्वर्ग बनाओ ।"
देकर संदेश, बुलाया घोड़ा
इंसानियत से बाहर छोड़ा ।
जान बची, लाखों मैं पाया
ऑख खुली, जो माँ ने जगाया ।
लेकिन संदेश मैं पहुँचाता हूँ,
उनकी इच्छा को जतलाता हूँ ।
कि-“ सब जीवों में वास प्रभू का, सबका तुम सत्कार करो ।
मानव हो तो, मानव जैसा, हरदम ही व्यवहार करो ।।”

कपिल कुमार सरोज